Date - 24 March 2022

अभ्यास DUSTLIK

- अभ्यास DUSTLIK (EX- DUSTLIK) भारत और उज्बेकिस्तान की सेनाओं के बीच आयोजित एक संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यास है।
- इस अभ्यास का तीसरा संस्करण 22 से 31 मार्च, 2022 तक उज्बेकिस्तान के यांगियार्क में आयोजित किया जा रहा है।

मुख्य बिंदु

- Ex-DUSTLIK का पिछला संस्करण मार्च 2021 में रानीखेत, उत्तराखंड में आयोजित किया गया था।
- इस अभ्यास में भाग लेने के लिए, भारतीय दल का प्रतिनिधित्व ग्रेनेडियर्स रेजीमेंट के एक प्लाटून बल द्वारा किया जा रहा है।
- इस अभ्यास में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली ग्रेनेडियर्स बटालियन भारतीय सेना की सबसे प्रतिष्ठित बटालियनों में से एक है।
- इस बटालियन को भारतीय सेना के स्वतंत्रता-पूर्व और आजादी के बाद के अधिकांश अभियानों में भाग लेने का गौरव प्राप्त है।

इस अभ्यास का फोकस

- दोनों सेनाओं के बीच यह संयुक्त अभ्यास संयुक्त राष्ट्र के अधिदेश के तहत अर्ध-शहरी इलाकों में आयोजित आतंकवाद विरोधी अभियानों पर ध्यान केंद्रित करेगा।

अभ्यास का उद्देश्य

- इस अभ्यास के प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य एक दूसरे से सर्वोत्तम अभ्यास सीखना और सामरिक स्तर पर अभ्यास साझा करना होगा।
- इस अभ्यास का उद्देश्य दोनों देशों की सेनाओं के बीच सहयोग, समझ और अंतरसंचालन को बढ़ावा देना भी होगा।
- अभ्यास 24 घंटे के सत्यापन अभ्यास के साथ समाप्त होगा जो दोनों देशों की सेनाओं के लिए एक परीक्षा होगी।

Yojna IAS

बोमा तकनीक: अफ्रीका

- हाल ही में राजस्थान के भरतपुर जिले के 'केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान' में अफ्रीका की 'बोमा तकनीक' का प्रयोग किया गया।
- इसका उपयोग चीतल या चित्तीदार हिरणों को पकड़ने और शिकार के आधार को बेहतर बनाने के लिए मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व में ले जाने के लिए किया जाता था।
- चीतल की IUCN रेड लिस्ट स्थिति 'कम से कम चिंता' है।

'बोमा कैप्चरिंग तकनीक' क्या है?

- अफ्रीका में बोमा कैप्चरिंग तकनीक बहुत लोकप्रिय है।
- इसमें जानवरों को एक फ़नल जैसी बाड़ से खदेड़ा जाता है और एक बाड़े में ले जाया जाता है।
- यह फ़नल एक पशु चयन-सह-लोडिंग संरचना का रूप लेता है और इसे जानवरों के लिए अपारदर्शी बनाने के लिए एक चटाई और हरे रंग के जाल से ढका होता है, जिसमें जानवरों को उनके परिवहन के लिए एक बड़े क्षेत्र में ले जाया जाता है।
- इस पुरानी तकनीक का इस्तेमाल सबसे पहले जंगली हाथियों को पकड़ने के लिए प्रशिक्षण और सेवा के लिए किया जाता था।
- इस स्थानांतरण अभ्यास को राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) द्वारा अनुमोदित किया गया है।
- शाकाहारियों के प्रवास से बाघ अभयारण्यों के आसपास ग्रामीण मवेशियों, भेड़ों और बकरियों के शिकार में कमी आएगी।

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान से संबंधित मुख्य बिंदु:

- केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को पहले भरतपुर पक्षी अभयारण्य के नाम से जाना जाता था।
- यह राजस्थान राज्य में स्थित है।
- यह यूनेस्को की विश्व धरोहर और रामसर साइट में शामिल है।
- ब्रीडिंग ग्राउंड: उत्तरी गोलार्ध के दूर-दराज के क्षेत्रों से विभिन्न प्रजातियां प्रजनन के लिए इस अभयारण्य में आती हैं। साइबेरियन क्रेन दुर्लभ प्रजातियों में से एक है जिसे अक्सर यहां देखा जाता है।
- जीव: इस क्षेत्र में सियार, सांभर, नीलगाय, जंगली बिल्लियाँ, लकड़बग्घा, जंगली सूअर, साही और नेवला जैसे जानवर पाए जाते हैं।
- वनस्पति: प्रमुख वनस्पति प्रकार उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन हैं, जिनमें बबूल नीलोटिका के साथ शुष्क घास के मैदान हैं।
- नदी: गंभीर और बाणगंगा दो नदियाँ हैं जो इस राष्ट्रीय उद्यान से होकर बहती हैं।

राजस्थान में संरक्षित क्षेत्र:

टाइगर रिजर्व:

- सवाई माधोपुर में रणथंभौर टाइगर रिजर्व (RTR)
- अलवर में सरिस्का टाइगर रिजर्व (एसटीआर)

Yojna IAS

- कोटा में मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व (MHTR)

राष्ट्रीय उद्यान:

- डेजर्ट नेशनल पार्क, जैसलमेर
- केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर

वन्यजीव अभ्यारण्य:

- सज्जनगढ़ वन्यजीव अभयारण्य, उदयपुर
- राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य (राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के त्रिकोणीय जंक्शन पर)

आईएनएस शिवाजी

- हाल ही में कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) ने आईएनएस शिवाजी को समुद्री इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उत्कृष्टता केंद्र (COE) के रूप में मान्यता दी है।
- समुद्री इंजीनियरिंग के क्षेत्र में आईएनएस शिवाजी को उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) के रूप में मान्यता किसी भी सैन्य संगठन के लिए अपनी तरह का पहला है और कौशल और प्रौद्योगिकी विकास के लिए आईएनएस शिवाजी की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

आईएनएस शिवाजी:

- आईएनएस शिवाजी लोनावाला, महाराष्ट्र में एक भारतीय नौसेना स्टेशन है।
- इसमें नेवल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग है, जो भारतीय नौसेना और तटरक्षक अधिकारियों को शिक्षित और प्रशिक्षित करता है।
- इसके तीन प्रमुख प्रशिक्षण संस्थान हैं- सेंटर ऑफ मरीन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (सीएमईटी), सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन मरीन इंजीनियरिंग और स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेज।
- न्यूक्लियर बायोलॉजिकल केमिकल डिफेंस स्कूल (एनबीसीडी), जो एनबीसीडी के सभी पहलुओं पर नौसेना कर्मियों को प्रशिक्षित करता है, भी स्टेशन में स्थित है।
- नौसेना स्टेशन को फरवरी 1945 में एचएमआईएस (महामहिम के भारतीय जहाज) शिवाजी के रूप में कमीशन किया गया था।
- आईएनएस शिवाजी के उत्कृष्टता केंद्र (समुद्री इंजीनियरिंग) की स्थापना 2014 में एक व्यापक जनादेश के साथ की गई थी, जिसमें अकादमिक संस्थानों के सहयोग से नौसेना अनुप्रयोगों के लिए विशिष्ट प्रौद्योगिकियों को शामिल करना, उच्च ख्याति के अनुसंधान एवं विकास और गुणवत्ता अनुसंधान शामिल हैं।
- इसका उद्देश्य भारतीय नौसेना, मित्रवत विदेशी नौसेनाओं और पूरे पारिस्थितिकी तंत्र में कर्मियों के कौशल में व्यापक सुधार करना था।

उत्कृष्टता केंद्र (सीओई):

Yojna IAS

- उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) एक ऐसा निकाय है जो एक विशिष्ट क्षेत्र/क्षेत्रों के लिए नेतृत्व, सर्वोत्तम अभ्यास, अनुसंधान, सहायता, प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण और कौशल प्रशिक्षण प्रदान करता है।
- 'उत्कृष्टता केंद्र' का शाब्दिक अर्थ है 'एक ऐसा स्थान जहां उच्चतम मानकों को बनाए रखा जाता है'।
- कौशल विकास और उद्यमिता के लिए राष्ट्रीय नीति, 2015 के अनुसार, राज्यों के साथ साझेदारी में प्रशिक्षकों के कौशल विकास और प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय कौशल विश्वविद्यालयों और संस्थानों को उत्कृष्टता केंद्र के रूप में बढ़ावा देने का निर्णय लिया गया था।
- कौशल पारिस्थितिकी तंत्र में उत्कृष्टता केंद्र के रूप में उद्योग के साथ साझेदारी में प्रशिक्षण मानकों को बढ़ाने, उत्पादकता को बढ़ावा देने, उभरते कौशल अंतराल को दूर करने और उद्योग की जरूरतों के साथ प्रशिक्षण और अनुसंधान को संरेखित करने के लिए एक-स्टॉप संसाधन केंद्र स्थापित किया गया है।
- कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) द्वारा कौशल मांग और आपूर्ति के बीच असंतुलन को पाटने के उद्देश्य से कुशल कार्यबल की निरंतर आपूर्ति और सर्वोत्तम प्रथाओं के प्रसार के लिए "उत्कृष्टता केंद्रों" को मान्यता देने का प्रस्ताव है।
- यह पहल ऐसे निकायों को कौशल क्षेत्र और संबद्ध क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करेगी ताकि वे प्रमुख उभरते क्षेत्रों में काम कर सकें जहां पहले से ही ज्ञान या कौशल की कमी है, ताकि उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किया जा सके।

Swadeep Kumar

Yojna IAS